

8 APRIL THE HINDU

### IF GANDHI WERE ALIVE TODAY

- राजनीति के बारे में गांधी के विचारों पर चर्चा की गई है।  
गांधी को भारतीय गणतंत्र के संस्थापक तथा लोकतांत्रिक राजनीति के वास्तुकार के रूप में माना जाता है। वर्तमान समय में गांधी की चुनावी समझ पहले से अधिक प्रासंगिक है।
- यदि आज गांधी जीवित होते तो वे निश्चित रूप से राजनीति के लोकलुभावन व अनैतिक रूप को देखते हुए चुनाव का बहिष्कार कर देते। नेताओं द्वारा लोगों को खुश करने के लिए लोकलुभावन घोषणाओं के कारण राजनीति गलत दिशा में जा रही है।
- वर्तमान में भारत को चुनाव में जनसमूह की अपेक्षा नैतिक नेताओं की आवश्यकता अधिक है।
- गांधी का राजनीति के प्रति दृष्टिकोण- राजनीति समाज को संगठित करने की कला है न कि सत्ता बनाने और पार्टी की तकनीक है। जहां पार्टी की राजनीति खत्म हो जाती है, वहां से गांधी का राजनीति दृष्टिकोण शुरू होता है।

### लोकतंत्र और जनतंत्र

- गांधी का राजनीति दृष्टिकोण जनता की इच्छाओं पर आधारित नहीं था, जैसा कि वर्तमान में देखने को मिलता है। गांधी व अंबेडकर जैसे राजनेताओं में जनता के खिलाफ निर्णय लेने का साहस था। गांधी का लोकतंत्र समाज को संगठित करना था। गांधी के अनुसार नेतृत्व करने वालों को भीड़ के कानून से बचना चाहिए और देश की प्रगति के लिए कार्य करना चाहिए।
- महत्वपूर्ण मामलों में यदि जनमत के विपरित भी कार्य करना पड़े तो पीछे नहीं हटना चाहिए। जैसे 1922 में चौरा-चौरी की हिंसा के बाद गांधी द्वारा असहयोग आंदोलन को वापिस ले लिया था, जबकि उस वक्त जनता का उत्साह चरम पर था। गांधी के अनुसार जनता अहिंसक संघर्ष के लिए तैयार नहीं था इसलिए आंदोलन को वापिस ले लिया गया था।
- गांधी ने आत्म परिवर्तन पर जोर दिया अर्थात् 'जो परिवर्तन आप विश्व में देखना चाहते हैं वह स्वयं में लाएं'
- गांधी ने राजनीति में चरित्र निर्माण व आत्म नियंत्रण की अवधारणा पर बल दिया जाए जिससे प्रतिनिधित्व या शासन की अवधारणा स्वतः ही महत्वहीन हो जाती है। एक आदर्श राज्य की स्थिति में कोई राजनैतिक शक्ति नहीं होगी तथा सबसे अच्छी सरकार वह है जो सबसे कम शासन करें।

- यदि गांधी आज जीवित होते तो निश्चित रूप से युवा पीढ़ी को जागरूक करते, राजनीति में भ्रष्टाचार, यौन उत्पीड़न और लोकलुभावन लोकतांत्रिक मुद्दों का बहिष्कार करते।

### **मुख्य परीक्षा प्रश्न**

महात्मा गांधी के आदर्श राजनैतिक संकल्पना को वर्तमान सरकार ने आगे बढ़ाते हुए 'मिनिमम गर्वनमेंट मैक्सिमम गर्वनेंस' की अवधारणा को अपनाया है, राजनीति में गांधी के राजनैतिक दृष्टिकोण की प्रासंगिकता को आप कहाँ तक देखते हैं?

## CAPITAL HIGH

**संदर्भ** - मार्च में भारतीय बाजार में विदेशी पूंजी का प्रवाह 4.89 अरब डॉलर रहा। जो फरवरी 2012 के बाद से भारतीय शेयरों में सबसे बड़ा विदेश प्रवाह है। मार्च में शेयर बाजार में 8% की वृद्धि हुई।

- फरवरी में 2.42 बिलियन डॉलर विदेशी निवेश था जो पिछले साल फरवरी में 4.4 बिलियन डॉलर का आउटफ्लो था।
- विदेशी निवेश बढ़ने के कारण
  1. इसका कारण विदेशी निवेशकों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर विश्वास
  2. अवसंरचनात्मक कारकों का विकास
  3. रूपये के मूल्य में वृद्धि होना, अक्टूबर में रूपये का मूल्य लगभग 74 रू प्रति डॉलर था जिसमें अब 7% का सुधार हुआ है तथा रूपया मजबूत हुआ है।
- भारत ने दो दशकों में पहली बार चीन से अधिक विदेशी निवेश प्राप्त किया क्योंकि चीन की अर्थव्यवस्था मंदी की ओर जा रही है जबकि भारत उभरती हुई अर्थव्यवस्था बन रहा है। कुछ अल्पकालिक कारक जैसे-
  1. निवेशकों के वर्ग के बीच राजनीतिक अस्थिरता की आशंका नहीं है।
  2. एक अन्य महत्वपूर्ण कारण पश्चिमी देशों के केंद्रीय बैंक द्वारा सस्ते ब्याज दरों पर ऋण दिया जा रहा है।
- विदेशी पूंजी का अधिक निवेश होने भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेत है लेकिन नीति निर्माताओं को सावधान रहकर नीतियां बनानी चाहिए क्योंकि एशियाई अर्थव्यवस्था को विदेशी पूंजी आकर्षित करने हेतु कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है।
- सरकार द्वारा संरचनात्मक सुधारों की गति को बढ़ाने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक की मदद से आर्थिक प्रबंधन सुनिश्चित करना चाहिए तथा श्रम व बाजार सुधारों पर ध्यान देना चाहिए जो भारत की दीर्घकालीन संरचना को प्रभावित करें।
- केंद्र व राज्य दोनों के लिए उच्च राजकोषीय घाटा तथा विदेशी पूंजी को आउटफ्लो की आर्थिक चुनौतियां हैं। इन मुद्दों पर भी ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

**मुख्य परीक्षा प्रश्न:**

वर्तमान में भारत दो दशकों में पहली बार चीन से अधिक विदेशी निवेश आकर्षित करने में सफल रहा यह भारतीय बाजार पर निवेशकों के बढ़ते भरोसे को प्रदर्शित करता है। इस कथन के संदर्भ में भारत सरकार द्वारा विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने के लिए उठाए गए कदमों की चर्चा करें।